समाजवादी भाव–अभिकल्पना और पं. जवाहर लाल नेहरु

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

समाजवादी भाव–अभिकल्पना
और
पं. जवाहर लाल नेहरु

डॉ. अखिलेश त्रिपाठी

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

समाजवादी भाव–अभिकल्पना और
पं. जवाहर लाल नेहरु

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-945367-6-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं • SAMPLE

समर्पण

पुत्रियाँ आर्या–आद्य (ADYA)
एवं पत्नी नीलम को सस्नेहद्य

SAMPLE

SAMPLE

भूमिका

समाजवाद एक ऐसा सपना है जिसने बीसवीं सदी में दुनिया को सर्वाधिक आन्दोलित किया। वर्तमान शताब्दी में भी दुनिया के अलग–अलग कोनों में अलग–अलग ढंग से लोग इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते रहेगें। इसमें किसी प्रकार की आशंका नहीं है। वर्तमान उदारीकरण के परिवेश में भी जब तक समाज में विषमता की स्थिति बनी रहेगी, समाजवाद नैसर्गिक रूप में जीवन्त रहेगा। यह मात्र पूंजीवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया नहीं है। प्रत्युत यह वह शाश्वत विचार है, जो विषमता एवं अन्याय के विरूद्ध संघर्ष की निरन्तरता का प्रतीक है। जैसे ईश्वर की प्राप्ति के लिए अलग–अलग मार्ग खोजे एवं बनाये जाते रहे है, वैसे ही विषमताओं का उन्मूलन करके समता परक समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए भी प्रयोग किये जाते रहे हैं परन्तु उन सबकी मूल प्ररेणा और उद्देश्य एक रहा है।

बीती सदी के प्रारम्भ में जब दुनिया के अनेक देशों में समाजवादी समाज रचना के अनेक प्रयोग हो रहे थे, भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय नौजवानों के एक समूह ने किसी एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र से न वंध कर समाजवाद का आयात करने के स्थान पर अपने ही देश की माटी और संस्कृत से एक नयी व्यवस्था की रचना के संघर्ष का सूत्र पात किया। इनमें पंडित नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण, युसूफ मेहर अली, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, मोनू मसानी, एन0 जी0 गोरे, सम्पूर्णानन्द, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, डॉ0 राम मनोहर लोहिया और एस0 एम0 जोशी आदि भारतीय समाजवादी आन्दोलन के प्रमुख संस्थापक कहे जा सकते हैं।

SAMPLE

ये मनस्वी तपस्वी कांग्रेस के अन्दर ही अपना एक अलग मंच बना कर स्वराज आन्दोलन पर समाजवादी रंग चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। शुरू में महात्मा गांधी को यह अच्छा नहीं लगा था, परन्तु बाद में उन्होंने आजादी और समाजवाद के दीवानों की इस टोली का महत्व समझा। समाजवादियों को शायद यह समझने में देर लगी कि महात्मा गांधी का कर्म और दर्शन वास्तव में समाजवाद के लक्ष्यों पर ही आधारित था भले ही वे इस शब्द का प्रयोग उतना नहीं करते थे। पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया इसी भावधारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् समाजवादी आन्दोलन के दो प्रवर्ग थे क्रमशः सत्ता पक्ष एवं विपक्ष। सत्तापक्ष का नेतृत्व देश के प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू कर रहे थे जबकि विपक्षी समाजवाद के तीन स्तम्भ थे– आचार्य नरेन्द्र देव, लोकनायक जय प्रकाश नारायण और डॉ. राम मनोहर लोहिया। ये विभूतियाँ हमारे बीच नहीं हैं लेकिन इनके कर्म और विचार युगों तक प्रासंगिक बने रहेंगे।

भारत में समाजवादी चिन्तन के बीज अति प्राचीन काल से ही पाये जाते रहे हैं और ऋग्वेद तथा धर्मग्रंथो में विशेषकर धम्म पद में मानव एकता, मातृत्व और आधुनिक समानता के सिद्धान्तों के दर्शन होते है परन्तु आधुनिक अर्थ में समाजवादी चिन्तन बीसवीं शताब्दी की उपज है। आर्थिक तथा सामाजिक पुनर्निमाण के दर्शन के रूप में समाजवाद भारत में पश्चिम के प्रभाव से ही विकसित तथा लोक प्रिय हुआ है।

भारत में आधुनिक समाजवाद के चिन्हों को लें, तो कहना होगा कि समाजवादी तत्वों का प्रथमतः दर्शन महर्षि अरविन्द के उन लेखों मे होता है जिन्हें 1893 में इन्दु प्रकाश नामक पत्र में "पुराने के बदले नव दीप" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित कराया। इन लेखों में महर्षि अरविन्द ने कांग्रेस की मध्यम वर्गीय मनोवृति की आलोचना करते हुए सर्वहारा की दशा सुधारने का आग्रह किया था। 1908 में लोकमान्य तिलक ने "केसरी" के लेखों में इसकी चर्चा की। लाला लाजपत राय सम्भवतः वे प्रथम भारतीय थे जिन्होंने समाजवाद और बोल्शेविकवाद पर कुछ लिखा। बोल्शेविकवाद के प्रति लाला लाजपत राय का कोई सहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण नहीं था, तथापि अपनी पुस्तकों में उन्होंनें कांग्रेस पर पूंजीपति आधिपत्य की कटु आलोचना की थी। 1920 में "इण्डियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस" के अधिवेशन का सभापतित्व भी लालाजी ने किया। एम0 एन0 राय जिन पर मार्क्सवाद का प्रभाव था,

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बुर्जुआ वर्ग द्वारा संचालन की आलोचना की थीं। चितरंजन दास रूसी क्रान्ति से अनुप्राणित अवश्य हुए तथापि क्रान्ति के प्रति उनमें कोई सहानुभूति पूर्ण आकर्षण नहीं था। दास यद्यपि समाजवादी नहीं थे, किन्तु उन्होंने भारत के ट्रेड यूनियन आन्दोलन के सम्बन्ध में बड़ी सहायता पहुँचायी। भारत में समाजवादी चिन्तन को प्रोत्साहन देने में पंडित जवाहरलाल नेहरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1926 में उन्होंने सोवियत संघ की यात्रा की। पंडित नेहरू ने "सोवियत रसिया" नामक एक लघु पुस्तिका में "रूस की तत्कालीन उपलब्धियों का प्रशंसात्मक चित्र उकेरा और "विश्व इतिहास की झलक" तथा "आत्मकथा" में कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक एवं आर्थिक पद्धति की भरपूर प्रशंसा की। इन पुस्तकों में हमें आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था की विशद विवेचना मिलती है।

भारत में समाजवादी चिन्तन का आरम्भ तो काफी पहले ही हो चुका था परन्तु समाजवादी आन्दोलन का वास्तविक श्री गणेश मई 1934 से हुआ जब "कांग्रेस समाजवादी दल" की स्थापना हुई। यह "भारत में समाजवाद के संगठनात्मक विकास" में एक महत्वपूर्ण घटना थी और इसी की स्थापना से सभी प्रान्तीय समाजवादी संगठनो और गुटों को अखिल भारतीय आधार पर मंच मिल गया। 1931 में बिहार में, 1932–33 में नासिक के केन्द्रीय कारावास में 1933–34 में उत्तर प्रदेश तथा बम्बई प्रान्तों में समाजवादी गुट स्थापित हो चुके थे, और इन्हीं गुटों ने वास्तव में कांग्रेस समाजवादी दल के बीच कार्य किया। समाजवादियो का प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन 17 मई 1934 को पटना में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में हुआ।

कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख प्रतिपादकों में जय प्रकाश नारायण, डॉ. लोहिया, अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्र देव, अच्युत पटवर्धन, एम. आर. मसानी, कमला देवी चट्टोपध्याय, पुरूषोत्तम विक्रम दास, युसूफ मेहर अली और गंगा शरण सिंह थे। ये दस समाजवादी नेता जो समाजवादी आन्दोलन के प्राण समझे जाते थे, अत्यन्त ही योग्य नवयुवक उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी और मुख्यतः शहरी मध्यम वर्ग के व्यक्ति थे जिनमें से अनेकों ने अपनी राजनीतिक विचार धारा के कारण परिवार या विवाह तक का त्याग कर दिया था।

सैद्धान्तिक रूप से ये समाजवादी नेता तीन मिश्रित प्रवृत्तियों में विभाजित थे – (1) मार्क्सवादी (2) ब्रिटिश श्रमिक दल की भाँति सामाजिक लोकतंत्रवादी (3) लोकतन्त्रात्मक समाजवादी जिन पर गान्धी जी के विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त तथा सविनय अवज्ञा के राष्ट्रावादी आन्दोलन का एवं वर्ग संघर्ष का प्रभाव था। इन प्रवृत्तियों के मध्य एक अशान्त समझौता था। ये समस्त समाजवादी राष्ट्रीय स्वतंत्रता एवं समाजवादी समाज की संरचना के व्यापक उद्देश्य से एक निष्ठ थे।

समाजवादी दल दो मुख्य उद्देश्यों को एक साथ साध रहा था। प्रथमतः वह कांग्रेस को यह विश्वास दिलाना चाहता था कि राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की सफलता के लिए आन्दोलन में मजदूरों एवं किसानों को सहभागी बनाया जाये, क्योंकि जब तक आन्दोलन अपने आकार में विस्तार कर व्यापकता नहीं लायेगा तब तक वह सफल नहीं हो पायेगा। द्वितीय कांग्रेस समाजवादी दल साधारण जनता को यह संदेश देना चाहता था कि वह जनता के जीवन स्तर और कार्य की दशाओं में सुधार के लिए जो संघर्ष कर रहा है, वह औपनिवेशिक दासता से मुक्ति पाने के एक राजनीतिक संघर्ष का अंगमात्र है। कांग्रेस समाजवादी दल ने इस बात का सतत् प्रयास किया कि कांग्रेस इस बात को समझे कि मुक्ति संग्राम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि वह इस बात को जनता को समझाए कि कांग्रेस भयानक सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दूर कर जनता के जीवन स्तर में परिवर्तन लायेगी।

भारतीय समाजवादी देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में कांग्रेस के साथ सदैव सहयोग करते रहे। देश के समाजवादी चिन्तकों की मुख्य देन रही है कि, उन्होंने मार्क्स के उद्देश्यों तथा तकनीकों का राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संघर्ष के साथ ताल मेल बिठाने का प्रयत्न किया। इस क्षेत्र में समाजवादी भावधारा के लोग साम्यवादी लोगो से अधिक सफल हो सके। समाजवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जो योगदान दिया उसने कई कट्टर राष्ट्रवादियों को यह मानने पर बाध्य किया कि राष्ट्रवाद और समाजवाद में मूल रूप से कोई भिन्नता नहीं है। यह वास्तव में समाजवादियों की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। 1947 में कांग्रेस समाजवादी दल के कानपुर अधिवेशन में दल के नाम से कांग्रेस शब्द हटा दिया। 1948 में समाजवादियों ने कांग्रेस पार्टी से पृथक होकर भारतीय समाजवादी दल नामक एक पृथक दल की स्थापना कर ली। स्वतन्त्रता के पश्चात् समाजवादी दल टूट, एकीकरण एवं बिखराव की लम्बी

कहानी है। बाद में कांग्रेस पार्टी ने अपना लक्ष्य समाजवाद को बनाया। स्थूल रूप से ही सही भारतीय राजनीति में समाजवाद श्रेय, प्रेय, पाथेय बन गया।

भारतीय समाजवादी चिन्तन के स्वरूप पर विहंगम दृष्टि से अवलोकन करने से यह बात स्पष्ट है कि भारतीय समाजवादी चिन्तन का विकास यूरोपीय समाजवाद के सन्दर्भ में दो बातों से भिन्न रहा है। प्रथमतः भारत में समाजवाद का इतिहास सामाजिक तथा आर्थिक पुनर्निमाण की एक योजना के रूप में नही हुआ बल्कि वह क्रूर विदेशी साम्राजवाद के बन्धनों से मुक्ति एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में भी विकसित हुआ है। 1900 से 1947 तक भारत की मूल समस्या भारत वर्ष की राजनीतिक स्वतंत्रता थी और कोई भी लोकप्रिय दल उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था। द्वितीय भारतीय समाजवादी चिन्तन के लिए यह आवश्यक था कि वह खेत मजदूरों एवं किसानों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करे। क्योंकि भारत में अभी सामन्तवाद विद्यमान था। देश के समाजवादी नेताओं ने प्रारम्भ में अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया लेकिन आगे चलकर वे आपसी फूट के शिकार बन गये और अपना प्रभाव धीरे–धीरे खोने लगे। भारतीय समाजवादियों ने तीन प्रमुख समस्याओं पर गम्भीर चिन्तन किया है– अविकसित अर्थतंत्र में किसानों की भूमिका, वर्ग संघर्ष तथा नियोजन। भारतीय समाजवादी लोकतांत्रिक तरीके से राजनीतिक स्वतंत्रता एवं आर्थिक पुनर्निमाण का परस्पर समन्वय चाहते हैं। संसदीय लोकतन्त्र में इनकी अनन्य आस्था है। गांधीवाद तथा भारतीय शासन के लोकतान्त्रिक परिवेश से अनुप्राणित होकर भारतीय समाजवादियों ने अपने समाजवाद को पूर्णतः अहिंसक बनाया तथा पाश्चात्य समाजवादियों के विपरीत आर्थिक विकेन्द्रकीरण का प्रबल पक्ष पोषण किया। सम्भवतः विकेन्द्रीकरण का प्रबल अनुसमर्थन, भारतीय समाजवाद को, गांधीवाद से विरासत के रूप में मिला है।[1]

वर्तमान उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के परिवेश में यह आमधारणा बनती जा रही है। कि समाजवाद अब अतीत की वस्तु या विचारधारा बन गयी है। सोवियत संघ का विघटन तथा चीन द्वारा क्रमशः शनैः शनैः उदारीकरण एवं विश्वबाजार की ओर कदम बढ़ाना, स्वयं भारत में उदारीकरण एवं विनिवेशीकरण की प्रक्रिया अपनी गति में है। परिणामतः आजकल सपनों के नवीनीकरण की बात होती है, उसमें से एक दूसरे को काटने वाले बयान आते है। एक कहता है कि समाजवाद का पुनरूत्थान असम्भव है। इतिहास का अन्त और विचार

धाराओं का अन्त कहने वाले ऐसा मानते है। इनका मानना है कि मानव सभ्यता ने जो हासिल करना था कर लिया। विचारधारा के माध्यम से मानव सभ्यता में गुणात्मक परिवर्तन सम्भव नहीं है। दूसरा तबका मानता है कि समाजवाद के बिना अब कोई चारा नहीं रहेगा। परन्तु यह कमजोर बयान है।

सत्य है कि समाजवाद उन्नीसवीं सदी में आया। यह किस का परिणाम, उत्पत्ति या बाई प्रोडक्ट है? जिस का यह बाई प्रोडक्ट है वह चीज मानव समूहों में सदैव रही है और उसके नये–नये रूप, नये–नये संस्करण विभिन्न युगों में सामने आते हैं। हम कहते हैं, एक शब्द है इंसान। यह शब्द प्रिय है। इंसान का मतलब एक सार्थक जीव है जिसको प्यार देना है वही इंसान है। जब से मनुष्यों का समाज शुरू हुआ है तब से उसमें एक धारा ऐसी रही है जो प्रत्येक मनुष्य को इंसान के रूप में सम्मानित जीवन जीते हुए देखना चाहती है। मनुष्य में यह जो आस्था है यह मनुष्य का जातीय मूल्य है। इक्कीसवीं सदी में जब हम मूल्यांकन करते है कि मनुष्य सभ्य हुए हैं या नहीं इसकी कसौटी क्या होनी चाहिए ? मनुष्य एक प्रजातीय अवधारणा है और इसका प्रजातीय मूल्यांकन होना चाहिए। इसीलिए सभ्यता का मूल्यांकन करते समय प्रत्येक मनुष्य की सम्मान की जिन्दगी है, या नहीं इसको देखना चाहिए। मनुष्य में यह आस्था आधुनिक होकर भी चिरन्तन है। समाजवाद ने संगठित रूप से एक प्रजाति के रूप में मनुष्य को परिभाषित किया है। इस दृष्टि से सभी मनुष्य बराबर हैं। सभी भाई–भाई हैं। समाजवाद इसी आस्था का प्रतीक है। समाजवाद एक पद्धति है। इसीलिए जीवन में ऐसी शक्तियाँ कार्यरत होंगी, तो उसमें ऐसी धाराएँ उत्पन्न होगी, जो प्रत्येक चीज को पैदा करेगी। समाजवाद शब्द के रूप में नया पुराना हो सकता है परन्त मूल वस्तु वहीं रहेगी। एक अरब के इस देश में अपनी पूंजी अपने संसाधनों के आधार पर भी हम विकास कर सकते है। यह सपना देखकर ही हम समाजवाद का सपना देख पायेंगे। इस तरह भारत एवं विश्व में जब तक असमानता विद्यमान है समाजवाद जीवन्त है।

इसी दृष्टि से "पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के समाजवाद का तुलनात्मक अध्ययन" पुस्तक की उपादेयता समीचीन प्रतीत होती है। स्वतंत्रता संग्राम के अपराजेय योद्धा पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के समस्त चिन्तन एवं मनन के अभिकेन्द्र में समाजवाद रहा है। समाजवाद के संदर्भ एवं

परिप्रेक्ष्य में पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया द्वारा अभिव्यक्त विचारों का यथा सम्भव तुलनात्मक निर्वचन का सद्प्रयास हुआ है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त है– पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं डॉ. राम मनोहन लोहिया के अभिप्रेरणा के स्रोत एवं अनुप्राणित करने वाले तत्व, पाश्चात्य देशों में समाजवाद, भारत में समाजवाद, पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों की तुलनात्मक अध्ययन, पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के सामाजिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन है। पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के आर्थिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, समाजवाद को पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया का अवदान एवं पंडित नेहरू एवं डॉ. लोहिया के समाजवादी विचारों का मूल्यांकन।

प्रस्तुत पुस्तक की अध्ययन पद्धति ऐतिहासिक है तथा इसे विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैली में अभिव्यक्त किया गया है।

अखिलेख त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
इश्वर शरण पी.जी. कॉलेज
राजनीति विज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

SAMPLE

SAMPLE

विषय–सूची

	भूमिका	*vii*
1.	पंडित जवाहर लाल नेहरु : असमाप्त जीवन वृत्त	1
2.	भारतीय समाजवाद और पंडित नेहरु	11
3.	समाजवाद का वैश्विक परिप्रेक्ष और नेहरु	72
4.	भारतीय समाज और पंडित जवाहर लाल नेहरु	98
5.	पं. नेहरू के राजनीतिक विचारों का अध्ययन	127
6.	पंडित नेहरु की अर्थ दृष्टि	170
7.	पंडित जवाहर लाल नेहरु समाजवादी भाव की समग्रता	203

नमूना SAMPLE

SAMPLE

1

पंडित जवाहर लाल नेहरु : असमाप्त जीवन वृत्त

पण्डित नेहरू का शैशव एक ऐसे परिवार में प्रारम्भ हुआ जब भारत में स्वतंत्रता का मुक्ति संग्राम अपनी निरन्तरता में था। पण्डित नेहरू का परिवार राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों का अभिकेन्द्र था। स्वाभाविक रूप से नेहरू जी के चिन्तन पर प्रथमतः प्रभाव उनके पारिवारिक परिवेश का पड़ा जो जीवन पर्यन्त छाया के सदृश साथ बना रहा। पण्डित नेहरू की विचार शैली पर उसके लक्षण स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं।[1] नेहरू जी पर तीन व्यक्तियों का प्रभाव स्पष्टतया पड़ा जिसे वह स्वयं स्वीकार करते हैं। प्रथमतः अपने पिता से, द्वितीय महात्मा गांधी से, जिनसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की अनुप्रेरणा प्राप्त की थी तथा तृतीय पण्डित नेहरू ने कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर से वैश्विक दृष्टि प्राप्त की थी।[2] इसके अतिरिक्त पण्डित नेहरू के चिन्तन के उद्‌भव एवं विकास में पाश्चात्य विचारकों एवं दर्शन का भी विशिष्ट योगदान रहा, जिसकी परिचर्चा उन्होंने अपनी आत्म कथा में की है। 1905 में नेहरू जी विद्याध्ययन के लिए इंग्लैण्ड के प्रवास पर गये। प्रस्थान के एक वर्ष बाद 1906 में ब्रिटेन में आम चुनाव आयोजित थे। इस आम चुनाव में उदारवादियों को सफलता प्राप्त हुई थी। इस परिघटना ने नेहरू जी के मन मस्तिष्क को गहरे रूप से अनुप्राणित किया।[3] ब्रिटिश उदारवाद की अमिट छाप उनके अन्तरमन में सदैव विद्यमान रही। इसी उदारवाद से

नमूना SAMPLE

अनुप्रेरित होकर पंडित नेहरू भारतीय संदर्भ में समाजवाद शब्द का अनुप्रयोग करते थे। वह समाजवाद नहीं था प्रत्युत सीधे अर्थों में ब्रिटिश उदारवाद था। शिक्षा के निमित्त ब्रिटिश प्रवास के समय मेरीडिथ टाउन सेण्ड की प्रसिद्ध कृति *'एशिया और यूरोप'* के स्वाध्याय से पण्डित नेहरू का मानसिक आकर्षण राजनीति की ओर हुआ। इसे पण्डित नेहरू स्वयम् स्वीकार करते हैं।[4] इस पुस्तक ने पण्डित नेहरू की आभ्यान्तरिक सम्वेदना को इतना झंकृत कर दिया कि अब पण्डित नेहरु की एशिया और यूरोप की राजनीतिक परिघटना में गहरी अभिरुचि जागृत हो गयी। फलतः एशिया और यूरोप की राजनीतिक घटनाएं नेहरू जी को गहरे रूप में अनुप्राणित करने लगीं। पण्डित नेहरू ने इसी समय के फेबियन तथा अन्य समाजवादी सिद्धान्तों से सम्बन्धित ग्रन्थों का गहन अनुशीलन किया। फलतः समाजवाद के प्रति पण्डित नेहरू के मन में चंचल आकर्षण और जिज्ञासा क्रमशः बढ़ती गयी। राजनीतिक सिद्धान्तों के गहन अनुशीलन–मनन ने पण्डित नेहरू को तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन अब वैचारिक रूप से स्पन्दित करने लगे, इन आन्दोलनों के प्रति उनकी रूचि दिनों दिन बढ़ती गयी। नेहरू जी के चिन्तन के उद्भव में ब्रिटिश उदारवाद का अधिक योगदान रहा है। उदार समाजवादी, विकासवादी सिद्धान्त को मानते हैं। उदार समाजवादी वैधानिक साधनों के माध्यम से शासन व्यवस्था में परिवर्तन का पक्षपोषण करते थे। वे वैधानिक साधनों के माध्यम से समाजवादी समाज को प्रतिस्थापना करना चाहते थे।[5] फलस्वरूप पं0 नेहरू सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक समस्याओं का समाधान वैधानिक साधनों के माध्यम से करना चाहते थे।

पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गांधी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। परन्तु महात्मा गांधी के सिद्धान्तों में उनकी आस्था सीमित रही है। भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में उनमें और गांधी जी में व्यापक अन्तर है। कभी–कभी प्रतीत होता है कि गांधी और नेहरू दोनों एक दूसरे के विपरीत छोर हैं। पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गांधी के *'साध्य और साधन की पवित्रता'* के सिद्धान्त का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, इस तथ्य को पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं।[6]

जिस कारण से नेहरू जी चौथे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में साम्यवाद की ओर आकृष्ट हुए, वह उनके सिद्धान्तों का ध्रुव वैपरित्य था।[7] उन्होंने देखा कि संसार साम्यवाद और फासीवाद के मध्य भीषण संघर्ष में संलग्न होने जा